जीविका
गरीबी निवारण हेतु बिहार सरकार की पहल

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति
राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, बिहार

बिहार सरकार

प्रथम तल, विद्युत भवन -2, बेली रोड, पटना – 800 021, दूरभाष :+91-612-250-4980, फैक्स : +91-612-250 4960, ईमेल : : info@brlp.in, वेबसाईट : www.brlp.in

पत्रांक : BRLPS/Project/463/13/Vol.-II/795 दिनांक: 08·06·18

'पशु सखी' नीति

1. पृष्ठभूमि

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) को बिहार राज्य में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के क्रियान्वयन हेतु नामित किया गया है। इसे लगभग 10 लाख स्वयं सहायता समूहों, 65 हजार ग्राम संगठनों और 1600 संकुल स्तरीय संघों के माध्यम से 1.5 करोड़ ग्रामीण गरीब परिवारों को संगठित कर सशक्त बनाने एवं जीविकोपार्जन की दिशा में अग्रसर करने का लक्ष्य है। स्वयं सहायता समूहों से सम्बद्ध ग्रामीण परिवारों की आजीविका की दिशा में पशुधन को कृषि का पूरक माना जाता है। कृषि क्षेत्र की सीमाएँ हैं यथा - कृषि योग्य भूमि का अभाव, मानसून की कमी अथवा अधिकता एवं अन्य प्राकृतिक प्रकोप। ऐसी स्थिति में ग्रामीण आजीविका के सन्दर्भ में पशुधन का महत्त्व बढ जाता है। जीविकोपार्जन, दुग्ध उत्पादन और स्वास्थ्य पोषण की दृष्टि से गाय, भैंस के बाद बकरी पालन का भी महत्व है। बिहार बकरी की आबादी की दृष्टि से भारत का तीसरा बड़ा राज्य है जहाँ बकरी की देश में कुल आबादी का लगभग 8.9% बकरी है। राज्य में गरीबी रेखा से नीचे निवास करनेवाली आबादी 42.6% है।

राज्य में बकरी पालन के क्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा रोग-प्रसार के कारण बकरियों की उच्च मृत्युदर तथा अन्य अनेक प्रकार की विकृतियाँ है। बकरियों से सम्बंधित स्वास्थ्य निवारक सेवा अंतिम पायदान तक उपलब्ध नहीं है, ऐसी स्थिति में समुदाय आधारित महिला को गाँव के स्तर पर पशु स्वास्थ्य की उचित देखभाल के लिए पशु-सखी के रूप में प्रशिक्षित किया जाना अपेक्षित है। 'पशु-सखी' बकरियों के स्वास्थ्य से सम्बंधित अनेक सेवाएँ प्रदान करेंगी यथा टीका करण, डी-वर्मिंग (विकृमीकरण) आदि और बकरी पालन की स्थिति को बेहतर बनाने की दिशा में बकरी पालकों को पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी। ग्रामीण स्तर पर ऐसी पशु-सखी की आवश्यकता है जो नियमित प्रशिक्षण प्राप्त कर निगरानी के माध्यम से बकरी पालन विषयक की श्रेष्ठ विधि का प्रसार करेगी तथा बकरियों को प्राथमिक चिकित्सा सेवा प्रदान करने हेतु वैसी स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को, जो बकरी पालन करती हैं, बकरी पालन हेतु प्राथमिक उपचार में अपना सहयोग प्रदान करेगी।

2. पशु सखी का चयन

पशु सखी का चयन नोडल ग्राम संगठन/ नोडल उत्पादक समूह द्वारा किया जायेगा। 100-120 स्वयं सहायता समूहों से जुड़े परिवारों की 300-500 बकरियों को 1 पशु सखी अपनी सेवा प्रदान कर सकेगी।

3. अपेक्षित अर्हता मानक

केवल महिला उम्मीदवार ही पशु-सखी के रूप में चयन का पात्र होंगी जिसके लिए अपेक्षित योग्यता संबंधी मानदंड निम्नानुसार होगा :-

(i) बकरी पालकों की सेवा करने एवं दक्ष पशु चिकित्सकों से परामर्श और निदेश प्राप्त करने की योग्यता होनी चाहिए।

(ii) उसमें बोलने, सुनने-समझने तथा संप्रेषण की अच्छी क्षमता होनी चाहिए साथ ही, बकरी पालकों को सहयोग प्रदान करने हेतु उसे यात्रा करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

(iii) उनकी न्यूनतम आयु 18 वर्ष की हो तथा उसे सम्बंधित गाँव या बगल के गाँव के स्वयं सहायता समूह के परिवार से सम्बद्ध होनी चाहिए। कमजोर वर्ग की वैसी महिला, जिसके बच्चे बड़े हों, को प्राथमिकता दी जा सकती है।

(iv) उसमें पढ़ने, लिखने और अंकगणितीय गणनाओं को समझने की क्षमता होनी चाहिए (शैक्षिणक योग्यता कम-से-कम 8वीं पास)।

(v) बकरियों को संभालने, बकरी पालन के क्षेत्र में कार्य करने एवं उससे सम्बंधित प्रशिक्षण/प्रदर्शन के लिए शारीरिक रूप से सक्षम होना चाहिए।

(vi) उसे बकरी पालन से सम्बंधित स्थानीय परंपराओं और चुनौतियों से अवगत होना चाहिए।

(vii) उसमें बकरी की विभिन्न नस्लों, बकरी के रोगों के लक्षणों और उनके स्थानीय रोगों के निवारक उपायों, बकरियों के रख-रखाव और बकरी के क्रय-बिक्रय से सम्बंधित ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता होनी चाहिए। हरे चारे के महत्व से उसे अवगत होनी चाहिए।

4. पशु सखी की जिम्मदारियाँ

बकरियों की उत्पादकता में सुधार के लिए पशु सखी बकरी के स्वास्थ्य की देखभाल में बकरी पालकों को सहायता प्रदान करेगी। इसके अतिरिक्त वह बकरी-पालन एवं प्रबंधन की परंपराओं, बकरी के स्वास्थ्य और महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में बकरी उत्पादक समूह के सदस्य को भी सहयोग प्रदान करेगी।

<u>महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ</u>

पशु सखी बकरियों की विभिन्न प्रकार की नस्लों और उनकी विशेषताओं की जानकारी लक्षित समूह को उलपब्ध करायेगी। वह बेहतर उत्पादकता वाली बकरियों की खरीद में भी बकरी पालकों को सहयोग प्रदान करेगी।

<u>प्रशिक्षण और प्रदर्शन में सहयोग :</u>

पशु सखी चारा-प्रबंधन, रख-रखाव प्रबंधन, स्वास्थ्य प्रबंधन इत्यादि पर बकरी पालकों को प्रशिक्षण प्रदान करेगी। वह बकरी के घर और चारा प्रबंधन - जैसे कम लागत में बकरी के निवास स्थान का निर्माण, कम लागत में चारा, अजोला की खेती, मोरिंगा का पौधारोपण इत्यादि के अभ्यास को भी प्रदर्शित करेगी। सर्वोत्तम परंपराओं के प्रदर्शन हेतु मेमना नर्सरी (बकरी उत्पादक समूह पर पूर्व से स्वीकृत नीति मसौदा के अनुसार) भी स्थापित करेगी।

<u>प्राथमिक चिकित्सा और अन्य समस्याओं के समाधान में सहयोग :</u>

पशु-सखी बकरियों के लिए निवारक स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करेगी (विशेष रूप से निवारक उपायों जैसे : बीमारी की बारम्बारता को कम करने के लिए टीकाकरण, निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार डी-वर्मिंग (विकृमीकरण), खसीकरण/ बधियाकरण एवं प्राथमिक चिकित्सा आदि पशु पालकों के दरवाजे पर उपलब्ध कराना। इन सभी सेवाओं के बदले पशु सखी बकरी पालकों से सेवा शुल्क प्राप्त करेगी, जिसकी दर ग्राम संगठन/उत्पादक समूह के परामर्श से निर्धारित की जाएगी। पशु-सखी को उपचारात्मक सेवा प्रदान करने की अनुमति नहीं है। यदि पशु सखी वैसा करेगी तो उसपर तत्काल कार्रवाई संभव है और उसेहटाने के लिए ग्राम संगठन/उत्पादक समूह द्वारा फैसला लिया जा सकता है। इस तरह की स्थिति में पशु सखी को हटाने की कार्रवाई की जा सकती है।

<u>इनपुट आपूर्ति सहयोग</u>

पशु सखी पशु-चारा, पशु-चाट, पूरक औषधीय आहार और औषधीय दवा का बिक्रय भी करेगी और भुगतान के आधार पर बकरी पालकों को उपलब्ध करायेगी जिसकी दर का निर्धारण नोडल ग्राम संगठन/उत्पादक समूह द्वारा किया जाएगा।

<u>विपणन सहयोग :</u>

- पशु सखी उत्पादक समूहों को विभिन्न स्थानीय बाजारों के बारे में जानकारी उपलब्ध करायेगी ताकि उत्पादक समूह एवं बकरी पालक अच्छी गुणवत्ता वाली बकरियों की खरीद और विभिन्न नस्लों की बकरियों की बिक्री की जानकारी से अवगत हो सकें।
- पशु सखी बकरी पालकों को वजन के आधार पर बकरियों की खरीद और बिक्री के प्रति जागरूक करेंगी और मोल-भाव के लिए भी उन्हें सक्षम बनायेंगी।
- पशु सखी बकरी उत्पादक समूहों को सामूहिक बिक्री में सहयोग प्रदान करेगी जिसका लक्ष्य यह होगा कि बकरी पालकों को अधिक लाभ पहुंचाया जा सके।

<u>उत्पादन सहयोग का लेखांकन एवं मूल्यांकन:</u>

- वह बकरी उत्पादक समूह की सभी पंजियों का अद्यतन संधारण करेगी।
- वह बकरी उत्पादक समूह की बैठक (पाक्षिक/मासिक) का आयोजन करेगी (बकरी उत्पादक समूह विषयक नीति पत्र पत्रांक-बीआरएलपीएस/परियोजना/ 463/ 13/ 1042 दिनांक 31.05.2017 के अनुसार)।
- प्रत्येक सप्ताह बकरी पालक परविारों से सम्पर्क एवं भ्रमण कर ग्राम संगठन/उत्पादक समूह से आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त करेगी तथा उन्हें आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध करायेगी।

- वह मासिक आधार पर ग्राम संगठन की बैठक में भाग लेगी और उत्पादक समूह की प्रगति पर चर्चा करेगी और विगत माह का प्रतिवेदन तथा अगले महीने की कार्य योजना समर्पित करेगी।
- वह आवश्यकतानुसार MIS के लिए डाटा संग्रह और प्रविष्टि करेगी।
- वह उत्पादक समूह सदस्यों को अभिलेखों का संधारण करने और निवेश के लागत-लाभ की गणना करने की दिशा में पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी।
- वह बकरी पालकों के प्रभावी मूल्यांकन के लिए प्रारंभिक एवं आधारभूत सर्वेक्षण और आवधिक सर्वेक्षण में भी सहयोग प्रदान करेगी।

भविष्य में, पशु सखी की सेवाओं का उपयोग गांव में समूह से जुड़े परिवारों की अन्य पशुधन सेवाओं एवं पशुधन गतिविधियों के लिए किया जा सकता है।

5. चयन प्रक्रिया

ग्राम संगठन/उत्पादक समूह पहले वर्णित पात्रता मानदंडों के आधार पर पशु सखी के चयन की आवश्यकता के बारे में ग्राम संगठन/उत्पादक समूह की बैठक में चर्चा करेगी। स्वयं सहायता समूह परिवारों के संभावित इच्छुक उम्मीदवार अपना प्रोफाइल/बायोडाटा/सीवी सम्बंधित ग्राम संगठन/उत्पादक समूह में जमा करेंगी। परियोजना कर्मचारियों के सहयोग से नोडल ग्राम संगठन/उत्पादक समूह आवेदनों की जांच करेगा और योग्य अभ्यर्थियों की प्रारंभिक सूची तैयार कर बाद में एक साक्षात्कार का आयोजन करेगा। परीक्षण और साक्षात्कार में प्रदर्शन के आधार पर नोडल ग्राम संगठन/उत्पादक समूह अंतिम रूप से पशु सखी का चयन करेगा। संपूर्ण चयन प्रक्रिया को नोडल ग्राम संगठन/उत्पादक समूह अपनी बैठक पंजी में विस्तृत रूप से दर्ज करेगा। चयनित पशु सखी की जानकारी और प्रोफाइल, चयन-प्रक्रिया के बाद ग्राम संगठन/उत्पादक समूह को भेजा जाएगा। नोडल ग्राम संगठन/उत्पादक समूह अपने क्षेत्र में काम कर रही सभी पशु साखियों का डेटाबेस बना कर तैयार रखेगा और प्रखण्ड परियोजना क्रियान्वयक इकाई और जिला परियोजना समन्वयक इकाई को पशु सखी से संबंधित प्रोफाइल की एक प्रति उपलब्ध करायेगा। चयनित पशु सखी के उपरान्त योग्यता क्रम से एक-दो अभ्यर्थियों को पशु-सखी की प्रतीक्षा सूची में रखा जाएगा।

6. पशु सखी के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम

चयनित पशु सखी को गांवों में औपचारिक रूप से अपनी भूमिका निभाने से पहले तीन चरणों में 15 दिनों का आवासीय प्रशिक्षण (प्रत्येक चरण में 5 दिन) प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण में चयनित पशु सखी को बकरी की नस्ल और इसकी विशिष्टियाँ, बकरी के शरीर और इसके व्यवहार, चारा प्रबंधन, स्वास्थ्य प्रबंधन, आवास प्रबंधन, रोग निवारण के उपाय, बधियाकरण, विपणन आदि में प्रशिक्षित किया जाएगा (विस्तृत पाठ्यक्रम अनुबंध-2 में संलग्न है)। निर्धारित प्रशक्षिण चर्या से चयनित पशु सखी को अवगत कराने हेतु उत्पादक समूह/ग्राम संगठन की जरूरतों के अनुरूप पशु/ बकरी पालन में विशिष्ट दक्षता प्राप्त एजेंसी यथा - मेसर्स आगा खां फाउन्डेशन, मेसर्स द गोट ट्रस्ट से सहायता प्राप्त की जा सकती है जिसके लिए उन्हें सहमति के आधार पर उचित भुगतान किया जा सकेगा।

7. पशु सखी का मानदेय

प्रारम्भिक स्थिति में पशु सखी का सेवा शुल्क नोडल ग्राम संगठन/उत्पादक समूह द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा। यह शुल्क नोडल ग्राम संगठन/उत्पादक समूह के पद धारकों द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित प्रपत्र (जो पशु सखी के मासिक प्रदर्शन पर आधारित होगा) के अनुरूप प्रदान किया जाएगा। पशु सखी के पास अपना बैंक खाता होना चाहिए क्योंकि पशु सखी के सभी प्रकार के भुगतान केवल उसके बैंक खाते में ही उपलब्ध करवाया जाएगा। पशु सखी के मानदेय के भुगतान निम्न सारणी के आधार पर निर्धारित होगा :

निर्धारित मानदेय	पहला वर्ष-1000 रूपया दूसरा वर्ष- 750 रूपया तीसरा वर्ष- 500 रूपया चैथा वर्ष- शून्य
कार्य पर आधारित प्रोत्साहन राशि	यह क्षेत्र स्तर पर सम्पादित गतिविधियों पर आधारित होगा। नोट-गतिविधिवार सेवा शुल्क का उल्लेख अनुलग्नक-1 में किया गया है।

पशु सखी को निश्चित मानदेय उसके द्वारा सम्पादित कार्य के आधार पर होगा। उपर्युक्त वर्णित मानदेय परियोजना से 3 साल तक दिया जाएगा। यह आशा की जाती है कि चौथे वर्ष से वह बकरी पालकों को विभिन्न सेवाएं प्रदान कर अपनी सेवा शुल्क से पैसे कमाने में सक्षम होगी।

8. पशु सखियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन और ग्रेडिंग

ग्राम संगठन/उत्पादक समूह की बैठक में पदधारक सदस्यों द्वारा मासिक आधार पर पशु सखी के प्रदर्शन की समीक्षा की जाएगी। ग्राम संगठन/उत्पादक समूह पशु सखी का उनके कार्यकलाप, उनकी गतिविधियों और उत्पादन के आधार पर मूल्यांकन करेगा। पशु सखी के कार्यों के मानकीकरण हेतु ग्राम संगठन / उत्पादक समूह के पदधारक सदस्यों द्वारा क्षेत्र की सांयोगिक (random) यात्रा की जायेगी। पशु सखी के कोटीकरण नोडल ग्राम संगठन/ नोडल उत्पादक समूह के स्तर पर त्रै-मासिक आधार पर किया जायेगा।

9. संसाधन सेवी के रूप में पशु सखी

अच्छे प्रदर्शन के आधार पर चयनित पशु सखियों का संसाधन सेवी/ ToT यानी प्रशिक्षकों के प्रशिक्षक के रूप में उपयोग किया जा सकता है। चयनित पशु सखी का उपयोग मान्य परंपराओं या गतिविधियाँ की स्वीकार्यता बढ़ाने एवं उनके प्रसार के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। पशु सखी मानदेय के अतिरिक्त निम्न विवरणी के अनुसार निम्न सुविधाओं की अधिकारी होगीः

सीआरपी/स्रोत प्रशिक्षक के रूप में पशु सखी के शुल्क का निर्धारण

क्र.सं.	स्थान	मानदेय प्रतिदिन	अभ्युक्ति
1	प्रखंड स्तर पर प्रखंड के अंदर	250 रु० प्रतिदिन	भोजन (या 100 रुपया प्रतिदिन भोजन के लिए) प्रखण्ड परियोजना क्रियान्वयन इकाई द्वारा।
2	जिला के अंदर अन्य प्रखंडों में	350 रु० प्रतिदिन	भोजन (या 100 रुपया प्रतिदिन भोजन के लिए) संबंधित प्रखण्ड परियोजना क्रियान्वयन इकाई/ जिला परियोजना समन्वयन इकाई द्वारा।
3	जिला से बाहर	400 रु० प्रतिदिन	भोजन (या 100 रुपया प्रतिदिन भोजन के लिए) और ठहरने की व्यवस्था संबंधित प्रखण्ड परियोजना क्रियान्वयन इकाई/ जिला परियोजना समन्वयन इकाई द्वारा।

'पशु-सखी' नीति में शामिल विभिन्न बिन्दुओं का व्यवहारिक अनुभवों के आधार पर संशोधन किया जा सकता है।

08/06/18

(बालामुरुगन डी.)
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी
-सह-
राज्य मिशन निदेशक

<u>अनुलग्नक-</u>

1. अनुलग्नक-1
2. अनुलग्नक-2

<u>वितरण हेतु-</u>

1. निदेशक/विशेष कार्य पदाधिकारी/ प्रशासी पदाधिकारी/ मुख्य वित्त पदाधिकारी/ कार्यक्रम समन्वयक/अधिप्राप्ति विशेषज्ञ/ अधिप्राप्ति पदाधिकारी
2. सभी राज्य परियोजना प्रबंधक एवं परियोजना प्रबंधक
3. सभी जिला परियोजना प्रबंधक/प्रभारी जिला परियोजना प्रबंधक/सभी विषयगत प्रबंधक/प्रभारी, सभी यंग प्रोफेशनल
4. सभी प्रखंड परियोजना प्रबंधक
5. आई.टी. सेक्शन।

अनुलग्नक-1

पशु सखी के लिए कार्य आधारित प्रोत्साहन राशि की स्वीकृत दर

क्र0सं0	गतिविधि	दर	माध्यम
1	पशु पालकों का सर्वेक्षण	10 रु०/प्रति परिवार	जीविका
2	बकरियों का प्राथमिक चिकित्सा उपचार	10 रु०/प्रति बकरा	समुदाय
3	डी-वर्मिंग (विकृमीकरण)	5 रु०/प्रति बकरा	समुदाय
4	टीकाकरण	8 रु०/प्रति बकरा	समुदाय
5	बधियाकरण	30 रु०/प्रति बकरा	समुदाय
6	बकरे द्वारा गर्भधारण	20 रु०/प्रति गर्भधारण	समुदाय
7	बकरियों का वजन	5 रु०/प्रति बकरा	समुदाय
8	बाहरी परजीवी को हटाना	5 रु०/प्रति बकरा	समुदाय
9	बकरी पालकों की संख्या जिनके द्वारा फीडिंग टरफ/हैंडिंग फुडर/वाटरिंग ट्रफ का इस्तेमाल आरंभ किया गया	25 रु०/प्रति परिवार	जीविका
10	अजोला पिट का निर्माण	20 रु०/प्रति परिवार	जीविका
11	बकरी शेड का निर्माण	50 रु०/प्रति परिवार	जीविका
12	बकरी पालकों का प्रशिक्षण	100 रु०/प्रति बैच	जीविका
13	तैयार केस अध्ययनों की संख्या (मैनेजर लाइवस्टाक द्वारा चयनित केस अध्ययन मामले में ही भुगतान देय)	20 रु०/प्रति केस अध्ययन	जीविका

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम-चरण-1

खंड	विषय	विवरणी
पशु सखी को बकरी पालन का परिचय	ग्रामीण क्षेत्र में बकरी पालन का महत्त्व	बिहार के परिप्रेक्ष्य में बकरी पालन का आर्थिक और सामाजिक महत्त्व। बकरी पालन से संबंधित मूल बकरी के मांस, दूध, चमड़ा, मल आदि की विशेषताओं की जानकारी।
	ग्रामीण क्षेत्र में बकरी पालन में पशु सखी की भूमिका	पशु सखी की आवष्यकता क्यों? पशु सखी द्वारा किये जाने वाले कार्य। पशु सखी के संभावित लाभ/आय। इस क्षेत्र में काम करने वाले अन्य लोग और पशु सखी के भविष्य की संभावनाएं।
	बकरी व्यवहार	सामान्य चराई, खाना, जुगाली, बकरी के बैठने की आदत।
	बकरी का वाह्य और आंतरिक शरीर	बकरी के शरीर का बाह्य एवं आंतरिक हिस्सा।
बकरी आवास	बकरी के लिए आवास का महत्त्व	बकरी का निवास, विपरीत मौसम में बकरी की रक्षा करता है। संक्रमण और बीमारियों को रोकने तथा उत्पादन व उत्पादकता में सुधार की दिशा में बकरी के अच्छे आवास का क्या महत्व है।
	बकरी का आवास बनाने के लिए किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए	बकरी के बैठने के व्यवहार, तापमान, सूर्य की किरण, बारिस, नमी, हवा का प्रवाह, शिकारी, चोरी, लागत, सुगमता के साथ भोजन एवं पानी, शेड की सफाई। बकरी के आवास निर्माण में क्या करें और क्या नहीं करें?
	स्थानीय स्तर पर बकरी आवास के लिए उपयुक्त मॉडल	बकरी आवास निर्माण में माडल बकरी आवास का उपयोग जमीन, दीवार, छत, रैंप आदि के समझाने में कैसे करें। विभिन्न प्रकार के बकरी आवासों के निर्माण की लागत की गणना।
	बकरी के आवास में स्वच्छता और जैव सुरक्षा	सफाई, कीटाणुशोधन और धुंआ देने का महत्त्व। अलगाव और संगरोध का ज्ञान और इसका महत्त्व। इसके लिए बकरी आवास में क्या करें और क्या नहीं करें?
बकरी चारा	बकरी के चारा में मुख्य पोषक तत्व	बकरी क्या-क्या खाती है और इसमें क्या होता है? कार्बोहाइड्रेड, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज और पानी का बकरी के खाने में महत्त्व। स्थानीय परंपराओं का उपयोग चारा खिलाने एवं पानी पिलाने में।
	बकरी चारा के मुख्य घटक	हरा (घास, चारा), सूखा (सूखी घास, भूसा आदि) और चारा। संतुलित चारा बनाने के लिए इन वस्तुओं का किस अनुपात में उपयोग।

	बकरी का चारा बनाना	स्थानीय स्तर पर उपलब्ध वस्तुओं का उपयोग करते हुए बकरी के लिए चारा की तैयारी।
	बकरियों में मिनरल ब्लाक चारा	मिनरल ब्लाक फीडिंग एवं मिनरल ब्लाक तैयारी के महत्त्व पर विस्तार से व्याख्या। मिनरल ब्लाक की लागत और यह बताना कि पशु सखी इस सेवा को कैसे प्रदान कर सकती है।
चारा	बकरी को मोटे चारे खिलाने का महत्व	घास, चारा और भूसे को पचाने में जुगाली की प्रक्रिया और जुगाली के महत्व की व्याख्या।
	बकरी के लिए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हरी घास	बकरी के चारे में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध घास, चारा, सूखा चारा का उपयोग किया जाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध जहरीले चारा की जानकारी।
	बकरी को एजोला चारा खिलाना	एजोला के खिलाने एवं खेती के महत्त्व की व्याख्या। एजोला खिलाने के दौरान होने वाले लाभ को प्रदर्शित करने के लिए पूर्व से एजोला खिला रहे पशु पालक का उदाहरण। मच्छरों से बचाने के लिए एजोला के तालाब निर्माण की प्रकिया में सावधानी। प्रत्येक बकरी के लिए एजोला की मात्रा।
बकरी प्रजनन	बकरी की विभिन्न नस्लें	मांस और दूध और अन्य नस्लों के प्रकारः उपयुक्त स्थानीय नस्ल की उपलब्धता और उनकी विषेषताएं।
	नस्ल सुधार से सम्बंधित बुनियादी बातें	चयन और संकरणः इसका महत्व, आंतरिक प्रजनन के नुकसान और इसकी रोकथाम के तरीके, कृत्रिम गर्भधारण की जानकारी और उसकी विशेषताएं।
	बकरा प्रबंधन	चयन, बेहतर नर बकरे की विशेषताएं, अच्छे नर बकरे के चयन की विधि, अच्छे नर बकरे के चयन की वैज्ञानिक विधि और नर का परस्पर विनिमय।
	बकरी प्रजनन चक्र और प्राकृतिक प्रजनन	जवानी, गर्मी की शुरूआत, ओस्ट्रस चक्र, गर्भावस्था, दूध पिलाने, गर्मी के संकेत और नर के लिए सबसे उपयुक्त समय।
	बधिया करना	अंडकोष निकालने का महत्व, अंडकोष निकालने का सही समय और बर्डिजो कैस्ट्रेटर का उपयोग अभ्यास हेतु। बधियाकरण में क्या करना चाहिए और क्या नहीं?

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम-चरण-2

खंड	विषय	विवरणी
बकरी के स्वास्थ्य की स्थिति	स्वस्थ बनाम बीमार बकरी	• स्वस्थ और बीमार बकरी के लक्षण। • स्वस्थ बकरी में शरीर का सामान्य तापमान और श्वसन।
	स्वस्थ बकरी में तापमान एवं श्वसन	• तापमान लेना • श्वसन क्रिया
बकरी की बीमारी और स्वास्थ्य समस्या की रोकथाम और नियंत्रण	बकरी बीमारी के कारण	संक्रामकः बैक्टीरिया, वायरस, कवक, प्रोटोजोवा, आंतरिक और बाह्य परजीवी
	जुनोटिक रोग	पशुजन्य रोगों का अर्थ, बकरियों के पशुजन्य रोग और उनकी रोकथाम
	बकरी के मुख्य जीवाणु संबंधी बीमारी और उसके रोकथाम के तरीके	एचएस और इंटरोटॉक्सएमिया, टीकाकरण का उपयोग और उसकी रोकथाम
	मुख्य विषाणुजनित रोग और उसका उपचार	पीपीआर, बकरी चेचक और एफएमडी और टीकाकरण से उसकी रोकथाम
	मुख्य प्रोटोजोल बीमारी और उसकी रोकथाम	कोकसोडियोसिस और बेबसियोसिस और उसकी रोकथाम
	आंतरिक परजीवी के कारण होने वाले मुख्य रोग	गोल कीड़ा, टेप कीड़ा, यकृत का झुकाव। सही दवा का उपयोग कर रोग का निदान एवं नियमित रूप से मल की जांच कर रोग से बचाव। कृमि नाशक प्रतिरोध से बचने के लिए डी वार्मर के बदलाव का महत्व।
	एक्टोपैरासाइट्स के कारण मुख्य बीमारियां	जूं, टिक, पिस्सु और मंगे का नियंत्रण और उसका घरेलू उपचार।
	टीकाकरण कैलेंडर और टीकाकरण	स्थानीय स्तर पर बकरी के लिए उपयोगी टीकाकरण कैलेंडर, टीका का संचालन, टीकाकरण का अभ्यास, शीत श्रृंखला का संधारण, सुरक्षित संचालन और वेक्सिन, निडल और सिंरिज का सुरक्षित निष्पादन।

	बकरियों में सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं का नियंत्रण	टिम्पोनी, दस्त, कब्ज, घाव, नाक से खून आना, त्वचा रोग, स्तन का सूजन, लंगड़ापन, सींग की टूटनः नियंत्रण एवं प्रबंधन, बकरियों में कुत्ते के काटने के पूर्व उनमें टीकाकरण।
	मूत्र का प्रतिधारण	मूत्र और उसके प्रबंधन का निर्धारण, नर बकरे के मूत्र मार्ग में पत्थर की रोकथाम।
	औषधीय और स्थानीय दवाएं	विभिन्न औषधीय दवाइयों के बारे में बुनियादी जानकारीः स्थानीय स्तर पर उपलब्ध वस्तुओं का का बीमारियों के निवारण और उपचार में उपयोग।
बकरी का सामान्य प्रबंधन	गर्भवती बकरी की देखभाल और प्रबंधन	मेमने के जन्म के समय आवास, भोजन एवं अन्य सहायता। कठिनाईपूर्ण प्रसव के दौरान देखभाल एवं नाल का प्रबंधन।
	युवा बकरी की देखभाल और प्रबंधन	नाभि रस्सी ट्रिमिंग, खीस का महत्व एवं उसे पिलाना। नवजात बच्चों की देखभाल, रेंगना, बच्चों की मृत्युदर को कम करने के उपाय।
	विभिन्न मौसमों में देखभाल और प्रबंधन	विपरीत मौसमः गर्मी, सर्दियों और बरसात के समय बकरियों की देखभाल एवं उनका प्रबंधन।
	नर बच्चों की देखभाल और प्रबंधन मांस उत्पादन के लिए	कमजोरी, बधियाकरण, भोजन, नियमित वजन, नियमित मल जांच, स्वच्छता।
	बकरी में डिर्वोमिंग	दवाई की पहचान, उपयोग एवं खुराक की गणना, डिवार्मिंग (बिकृमीकरण) की जरूरत, बदलते रूप से डिर्वामर्स का महत्व।
क्षेत्र प्रदर्शन	दांत द्वारा उम्र की गणना	दांत निकलना और उम्र बढ़ना
	खुर ट्रिमिंग	महत्त्व और अभ्यास
	बकरी की पहचान	पहचान के लिए खुर, सींग की टैगिंग/पैंटिंग। पहचान क्यों महत्त्वपूर्ण है।
	बकरी के स्वास्थ्य और प्रबंधन में इस्तेमाल होने वाले उपकरण	थर्मामीटर, निडल, सिरिंज, कास्ट्रेटर, खुर को छांटना, चारागाह, पानी पीने का बरतन, ठंडा बक्सा, झरना आदि।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम-चरण-3

खंड	विषय	विवरणी
टीओटी	टीओटी के मुख्य बिन्दु	पशु सखी के लिए प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण (ToT)
	पशु सखी के लिए टीओटी और पशु सखी द्वारा प्रस्तुतीकरण	पषु सखी कार्य और बकरी का आहार (टीओटी अभ्यास-1) बकरी आवास, प्रजनन नर का प्रबंधन एवं देखभाल (टीओटी अभ्यास-2) स्वास्थ्य प्रबंधन और सामान्य प्रबंधन (गर्भधारण और बच्चे) (टीओटी अभ्यास-3)
बकरी विपणन और बकरी पालन उद्यमशीलता	विभिन्न उद्येश्यों के लिए बकरी की बिक्री	मांस के लिए बेचना, मादा प्रजनन के लिए रखना, नर को बेचना, अनुत्पादक बकरी का चुनाव, बाजार और मूल्य में विभिन्न उद्देश्यों से बकरी की मांग
	बकरी बिक्री के लिए कीमत का निर्धारण	मांस के उद्येश्य के लिए वजन और प्रति किलो के आधार पर मूल्य की गणना, तदर्थ की कीमत के साथ इसकी तुलना।
	विषेष बाजार के लिए बकरी की बिक्री	विभिन्न त्यौहारों के दौरान प्रतिस्पर्धी मूल्य
	बकरी पालन उद्यमिता	बकरी पालन में निवेश और वापसी की गणना
बकरी पालन के लिए सरकारी योजनाएं	बीमा	बकरियों का बीमा और उसका महत्व, सामुदायिक बीमा मॉडल
	ऋण	बकरी के रख रखाव के लिए ऋण-उद्यम पूंजी योजना, सरकारी सहयोग प्राप्त योजना जीविका, बैंक और एसएचजी
बकरी पालन के लिए वित्तीय प्रबंधन	लेखांकन	निवेश की जानकारी और बकरी पालन के लाभ को प्राप्त करने के लिए लेखांकन
	सामान्य लेखा	लाभ-हानि की जानकारी के लिए वित्तीय लेखांकन और सामान्य तुलना
बकरी विपणन अध्ययन	बकरी बाजार अध्ययन	स्थानीय बाजार का भ्रमण, खरीद और बिक्री का अभ्यास, अच्छे और बुरे पक्ष का पूर्व आकलन, बेहतर विपणन रणनीति को अपनाना।